इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों का शिल्प विधान

कुमाऊँ विश्वविद्यालय की पी–एच. डी.
(हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

निर्देशिका
डॉ0 (श्रीमती) बीना मथेला
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
एम0 बी0 राजकीय स्ना0 महाविद्यालय
हल्द्वानी (नैनीताल)

शोधार्थी
चन्द्रशेखर पाटनी
हिन्दी विभाग
नामांकन संख्या : 974093

2008

हिन्दी विभाग
एम0 बी0 राजकीय स्ना0 महाविद्यालय
हल्द्वानी (नैनीताल) 263141

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

भूमिका

उपन्यास जीवन का एक ऐसा कलात्मक सृजन है, जिसमें यथार्थ जीवन की जटिलतम् स्थितियों, परिस्थितियों और मनःस्थितियों की अभिव्यक्ति होती है। आधुनिक उपन्यास पूर्ववर्ती काल्पनिकता से बाहर आकर यथार्थता की ओर उन्मुख हुआ है, साथ ही उसमें प्रवृत्तिजन्य विविधता भी दृष्टिगोचर हो रही है। इनमें आंचलिक, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक व मनोविश्लेषणात्मक प्रवृत्तियाँ प्रमुख हैं। विविध प्रवृत्तियों के उपन्यासों में शिल्पविधि की वैशिष्टता देखने को मिलती है। आंचलिक उपन्यासों में आंचलिक शिल्पविधि, ऐतिहासिक उपन्यासों में ऐतिहासिक शिल्पविधि तथा मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों में मनोविश्लेषणात्मक शिल्पविधि के दर्शन होते हैं। आधुनिक हिन्दी उपन्यास साहित्य में मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों का अपना अलग स्थान है, जिसके विकास में जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, देवराज उपाध्याय आदि मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासकारों का अभूतपूर्व योगदान रहा है।

इलाचन्द्र जोशी कुमाऊँ मूल के प्रमुख मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासकार हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, निबन्ध, समालोचना, काव्य आदि विधाओं में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया, लेकिन अत्यधिक ख्याति मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासकार के रूप में पायी। यद्यपि उनकी कर्मस्थली इलाहाबाद रहा, लेकिन कुमॉउनी मूल के होने के कारण कुमाऊँ विश्वविद्यालय में उनके उपन्यासों की शिल्पविधि का अध्ययन अधिक नहीं हो पाया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में इलाचन्द्र जोशी के उपन्यास साहित्य के शिल्प का विशद् विवेचन किया गया है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध दस अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय 'हिन्दी उपन्यास' में उपन्यास का अर्थ व परिभाषा को स्पष्ट करते हुए पाश्चात्य और भारतीय सन्दर्भ में अलग–अलग परिभाषित किया है। तत्पश्चात् उपन्यास की विशेषता व हिन्दी उपन्यास के क्रमिक विकास को स्पष्ट करते हुए प्रमुख उपन्यासकारों एवं उनके उपन्यासों का वर्णन किया गया है।

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

द्वितीय अध्याय 'उपन्यास और शिल्प' में शिल्प विधि का अर्थ व स्वरूप को स्पष्ट करते हुए शिल्प और शैली में अन्तर को निरूपित किया है। इसमें हिन्दी उपन्यासों के शिल्पगत विकास में प्रारम्भिक युगीन, प्रेमचन्द युगीन, प्रेमचन्दोत्तर युगीन व स्वातंत्र्योत्तर युगीन उपन्यासों के शिल्प का वर्णन किया है।

तृतीय अध्याय ' मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास' में मनोविश्लेषण को स्पष्ट करते हुए फ्रायड, एडलर व युंग के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्तों को स्पष्ट करते हुए हिन्दी उपन्यासों पर इनके प्रभाव का वर्णन किया है। हिन्दी उपन्यास साहित्य में मनोविज्ञान के प्रवेश को भी इसी अध्याय में निरूपित किया है।

चतुर्थ अध्याय 'उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी' में इलाचन्द्र जोशी के व्यक्तित्व को स्पष्ट किया गया है। उनका जन्म, परिवार, परिवेश, समाज आदि के आधार पर उनके व्यक्तित्व विकास की प्रक्रियाओं पर प्रकाश डाला गया है। इलाचन्द्र जोशी के साहित्यिक जीवन का वर्णन करते हुए उनके कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। इसमें मुख्यतः उपन्यास, कहानी, निबन्ध व समालोचना आदि का विशद् विवेचन किया गया है।

पंचम अध्याय 'वस्तु शिल्प' में इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों के वस्तु शिल्प का विवेचन किया गया है। उनके उपन्यासों में कथा का प्रारम्भ, कथा का विकास एवं उपसंहार का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया हैं।

षष्ट अध्याय 'चरित्र शिल्प' में इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में चरित्र शिल्प को उद्घाटित किया है। इसमें पात्रों का चयन, सृजन, चरित्र चित्रण की प्रणालियाँ, उनके उपन्यासों में वर्णित मनोविश्लेषणात्मक शिल्प एवं पात्रों की विभिन्न मानसिक प्रवृत्तियों का वर्णन किया गया है।

सप्तम अध्याय 'वातावरण शिल्प में इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में वातावरण के निरूपण को स्पष्ट किया है। इसमें बाह्य वातावरण एवं आन्तरिक वातावरण दोनों को ही विस्तृत रूप से स्पष्ट किया है।

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

अष्टम अध्याय ' भाषा शैलीगत शिल्प' में इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में व्यवहृत भाषा व शैली का मूल्यांकन हुआ है। इसमें भाषा के यथार्थ चित्रण, दार्शनिक भाषा, काव्यमयी भाषा, संस्कृत निष्ठ भाषा एवं वैज्ञानिक भाषा को रेखांकित किया है। शैली के अन्तर्गत इनके उपन्यासों के शैली वैशिष्टय को निरूपित किया है। उनके उपन्यासों में प्रयुक्त विश्लेषणात्मक, आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक एवं चित्रात्मक शैली का विशद् विवेचन किया है।

नवम् अध्याय 'उद्देश्यगत शिल्प' में इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों में वर्णित उद्देश्य को वर्णित किया है। अन्तिम अध्याय में उनके उपन्यास साहित्य का मूल्यांकन करते हुए उपलब्धियों एवं शोध निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को प्रस्तुत करने में मैं अपने परम्पूज्य माता–पिता एवं परिवारजनों का उल्लेख करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ, जिनके आशीर्वाद एवं प्रोत्साहन से यह कार्य पूरा हो सका है। सर्वप्रथम मैं अपनी परमपूज्य माताजी श्रीमती नैना पाटनी का उल्लेख करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ, जिनके आशीर्वाद से मैं इस कार्य को करने में सफल हुआ हूँ। मैं अपने स्व0 पिताजी श्री गोकुलानन्द पाटनी का उल्लेख करना भी अपना कर्त्तव्य समझता हूँ जिनकी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से ही यह कार्य पूरा हो पाया है। उनके अन्दर स्थित धैर्य, संयम व लगन मेरी प्रेरणा का प्रमुख स्रोत बने, जिसका प्रतिफल प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध है, उनकी स्मृतियाँ ही अब शेष हैं। 7 अप्रेल 2008 को वे हमें छोड़कर सदा के लिए चले गये।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को पूरा करने में मेरे भैय्या–भाभी श्री कैलाश चन्द्र पाटनी एवं श्रीमती गीता पाटनी का उल्लेख करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ, जिन्होंने इस शोध–प्रबन्ध को पूरा करने में आने वाले सभी कठिनाइयों को मुझ तक पहुँचने भी नहीं दिया। ममतामयी भाभी की प्रेरणा मुझे हर समय सबलता प्रदान करती रही।

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

डॉ. हरिश्चन्द्र पाठक, पूर्व प्राचार्य ओ. एस. राजकीय महाविद्यालय देवप्रयाग (टिहरी गढ़वाल) का आभारी हूँ, जिनके कारण ही मैं इस ओर प्रवृत्त हुआ। प्रो. सी.एस. मथेला, विभागाध्यक्ष रसायन विज्ञान विभाग, डी.एस.बी. कैम्पस नैनीताल का भी आभारी हूँ, जिन्होंने समय–समय पर मेरी मद्द की।

मेरे इस शोध–प्रबन्ध की निर्देशिका डॉ. श्रीमती बीना मथेला, प्रवक्ता हिन्दी विभाग, एम.बी.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी की प्रेरणा व सुयोग्य मार्गदर्शन से ही यह शोध–प्रबन्ध पूरा हो सका है। उनके प्रति आभार प्रदर्शित करना तो एक प्रकार की कृतघ्नता होगी। उन्होंने जिस तत्परता और लगन से इस शोध–प्रबन्ध में मेरा निर्देशन किया वह जीवनपर्यन्त स्मरण की वस्तु रहेगी।

अन्त में मैं उन सभी का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनका सहयोग मुझे इस शोध–प्रबन्ध को पूरा करने में मिला। एम.बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी के पुस्तकालय के सभी कर्मचारियों का आभारी हूँ, जिनकी सहायता के बिना यह कार्य सम्भव ही नहीं था। साथ ही उन सभी का आभार व्यक्त करता हूँ, जहाँ से मुझे पुस्तकें प्राप्त हुई। उन विद्वान लेखकों के प्रति मैं विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ, जिनकी कृतियों से मैंने सहायता ली है।

चन्द्रशेखर पाटनी

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

विषय सूची

भूमिका

प्रथम अध्याय : हिन्दी उपन्यास **8—56**

उपन्यास की अवधारणा — उपन्यास का अर्थ, परिभाषा, पाश्चात्य सन्दर्भ में, भारतीय विद्वानों के सन्दर्भ में।

उपन्यास की विशेषता

उपन्यास का क्रमिक विकास — प्रेमचन्द से पूर्व का युग, प्रेमचन्द युग, प्रेचन्दोत्तर युग, स्वातंत्र्योत्तर युग।

द्वितीय अध्याय : उपन्यास और शिल्प **57—78**

शिल्पविधि का अर्थ व स्वरूप —

शिल्प और शैली

हिन्दी उपन्यासों का शिल्पगत विकास — प्रारम्भिक उपन्यासों का शिल्प, प्रेमचन्द युगीन उपन्यासों का शिल्प, प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों का शिल्प, स्वातंत्र्योत्तर युगीन उपन्यासों का शिल्प।

तृतीय अध्याय : मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास **79—104**

मनोविश्लेषण —

फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त— अवचेतन, अवरोध और दमन, शैशव कामुकता, लिबिडो, इडिपस मनोग्रन्थि, प्रवृत्तियों का ध्रुवीकरण, इदं अहं और पराहं।

एल्फ्रेड एडलर का वैयक्तिक मनोविज्ञान

कार्ल गस्टैव युंग का सिद्धान्त

हिन्दी उपन्यासों पर प्रभाव

हिन्दी उपन्यास साहित्य में मनोविज्ञान का प्रवेश

चतुर्थ अध्याय : उपन्यासकार इलाचन्द्र जोशी **105—184**

व्यक्तित्व — जन्म एवं परिवार, परिवेश, समाज, साहित्यिक गतिविधियाँ एवं पुरस्कार ।

कृतित्व — उपन्यास, कहानी, निबन्ध एवं समालोचना, विविध।

पंचम अध्याय : वस्तु शिल्प **185—212**

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

मानसिक कुण्ठाओं और विकृतियों पर आधारित वस्तु

व्यक्ति प्रमुख का मनोविश्लेषण– कथा का प्रारम्भ, कथा का विकास, उपसंहार।

षष्ट अध्याय : चरित्र शिल्प **213–239**

चरित्र–चित्रण की प्रधानता– पात्रों का चयन, पात्रों का सृजन।

चरित्र–चित्रण का प्रणालियाँ– प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष (परोक्ष)।

मनोविश्लेषण प्रधान शिल्प– स्वयं पात्र द्वारा, उपन्यासकार या अन्य पुरूष द्वारा।

मानसिक प्रवृत्तियों की प्रधानता– कुण्ठा, आत्मरति, पाशविकता, अहंवादिता, मनोविकृति।

सप्तम् अध्याय : वातावरण शिल्प **240–261**

मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास और वातावरण शिल्प

आन्तरिक वातावरण– मनःस्थिति द्वारा वातावरण सृजन।

वाह्य वातावरण– प्रकृति चित्रण द्वारा वातावरण सृजन, समाज चित्रण द्वारा वातावरण सृजन।

अष्टम् अध्याय : भाषा–शैलीगत शिल्प **262–276**

भाषा – यथार्थ चित्रण, दार्शनिक भाषा, काव्यमयी भाषा, संस्कृतनिष्ठ भाषा, वैज्ञानिक शब्दावली

शैली – विश्लेषणात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, चित्रात्मक शैली ।

नवम् अध्याय : उद्देश्यगत शिल्प **277–286**

मानसिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण

यौनवाद

हीनता ग्रन्थि और अहंता के दर्शन

व्यक्ति चित्रण द्वारा सामाजिक जीवन का चित्रण

दशम् अध्याय : उपसंहार **287–297**

उपलब्धि, मूल्यांकन, निष्कर्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची **298–306**

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

प्रथम अध्याय

हिन्दी उपन्यास

उपन्यास की अवधारणा

उपन्यास का अर्थ

परिभाषा

पाश्चात्य सन्दर्भ में

भारतीय विद्वानों के सन्दर्भ में

उपन्यास की विशेषता

उपन्यास का क्रमिक विकास

प्रेमचन्द से पूर्व का युग

प्रेमचन्द युग

प्रेमचन्दोत्तर युग

स्वातंत्र्योत्तर युग

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/